<u>प्रस्तावना</u>

मानव एक चिंतनशील प्राणी हे। वह अपनी वह अपनी बुध्दि तथा ज्ञान के आधार पर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनेक प्रयत्न करता है। लेकिन सभी प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति करने में वह स्वय सफल नहीं होता है। कई ऐसी परिस्थितियाँ आती है जब वह अपने आप को उन्हे नियंत्रित करने मे असमर्थ होता है। उसके सामने कई ऐसी घटनाएँ घटित हाती है, जिन्हे नियंत्रित करने में वह अपने आप को लाचार पाता है। इन स्थितियों के सामना करने के लिए मानव कुछ ऐसी शक्तियों एवं प्रणालियो की सहायता लेता है जो उसकी शक्ति से परे हैं, श्रेष्ठ है, समाज से परे यानि परलौकिक है। इसी प्रकार के विश्वास के कारण मानव समाज में जादू और धर्म की उत्पत्ति हुई। विज्ञान मानव समाज की सबसे विकसित अवस्था प्रस्तुत करता हैं।

"धर्म यानि रेलिजन शब्द का निर्माण ग्रीक शब्द 'रेलिजियो' से हुआ है"। रेलिजियों का अर्थ बाँधना अथवा संबंधित करना होता हैं। इस दुष्टि से देखा जाए तो धर्म का अर्थ मानव को अलौकिक शक्ति अथवा इश्वर से जोड़ना है। धर्म की उत्पत्ति कब और कैसे हुई। कुछ विद्वानों में विभिन्न मत हो सकता है। किन्तु उत्पत्ति 'भय' के कारण हुई हैं।

अर्दमानव से मानव की प्रक्रिया से पूर्ण मानव बनने तक मनुष्य की मस्तिष्क का पूर्ण विकास नहीं हो पाया था। इस काल में मनुष्य काफी संघर्षमय जीवन बीता रहा था। मानवों को ऐसा विश्वास हुआ कि बहुत ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं, जिन पर किसी मानव का किसी भी प्रकार का नियंत्रण नहीं होता हैं, यानि कुछ ऐसी शक्तियाँ है जो मानव के नियंत्रण से परे है। उनमें काफी भय या भ का पहला कारण प्रकृतिक और दूसरा जंगली जानवरों का अचानक आक्रमण था। इन दोनो में वे प्रकृति से सबसे ज्यादा प्रभावित थे। प्रकृति में अचानक बिजली का कड़कना, बादल का गरजना, फिर बारिस का होना, दिन रात का होना, भुकंप आना, आंधी तुफान इत्यादि कारणों से लोग भयभीत हो जाते थे। इन सब कारणों के पीछे उनका तर्क यह था कि कोई न कोई अलौकिक शक्ति है, जो यह सब उसी के द्वारा संचालित होता है। अत: इन अलौकिक शक्ति को नियंत्रण में रखने तथा भय से मुक्ति पाने, उनके कोप से बचने का

एकमात्र उपाय यह था कि वह उनके सम्मुख सिर झुकाकर पूजा पाठ, प्रार्थना, जब तप, जादुई मंत्र अराधना इत्यादि विधियों द्वारा प्रसन्न किया जा सकता है। इस प्रकार से मनुष्य के जीवन या समाज में धर्म और जादू की उत्पत्ति और विकास हुई है। और यह परम्परा आज तक चली आ रही हैं।

पूर्व में किए गये अध्ययन

ललित प्रसाद विद्यार्थी (1931-1983) ने अपनी पुस्तक, सैक्रेड कांप्लेक्स इन हिन्दु गया (1961) में धार्मिक संकुल की अवधारणा का विकास किया हैं।

1) धार्मिक भूगोल 2) धार्मिक अनुष्ठान 3) धार्मिक विशेषज्ञ के आधार पर वर्णन करने का प्रयास किया हैं। उन्होंने इस पुस्तक में प्राचीन धार्मिक शहर गया के संर्दभ में भारतीय सभ्यता का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। इन्होंने गया के अलाव काशी, भुवनेश्वर, पुरी, देवघर, द्वाराका, अयोध्या, ऋषिकेश, बद्रीनाथ, केदारनाथ, रामेश्वरम् आदि स्थानों की धार्मिक संकुल को समझने का प्रयास किया हैं। विद्यार्थी ने सौरिया पहाड़ी के मालर जनजाति पर कार्य किया।

टायलर (1871) ने अपनी पुस्तक 'साईटिफिक थ्योरी ऑफ कल्चर' में धर्म की व्यख्या प्रकार्यत्मक सिध्दांत के आधार पर करने का प्रयास किया। मैलीनोस्की ने पश्चिम प्रशांत महासागर में ट्रोब्रीएण्ड द्वपवासियों का अध्ययन किया।

ऐडिक्लिफ-ब्राउन (1952) के अनुसार धर्म की के संबंध में संरचना प्रकार्यवाद सिध्दांत की स्थापना की है। धर्म के कारण एक विशेष प्रकार की सामाजिक संरचना विकसित हुई है।

एम.एन. श्रीनिवास ने ऐडक्लिफ-ब्राउन के अनुष्ठान के सिध्दांत का प्रयोग किया। कुर्ग जाति के लोग कर्नाटक की कुर्ग जिले के निवासी हैं जिनके सामाजिक जीवन का धार्मिक मान्यताओं और प्रक्रियाओ का श्रीनिवास ने करीब से अध्ययन किया।

इमायल दुर्खिम (1949) की पुस्तक 'एलेमेटरी फार्म आफ रेलिजियस लाइक' में समाज शास्त्री सिध्दांत का प्रतिपादन किया है।

मैक्सम्युलर ने प्रकृतिवाद सिध्दांत का प्रतिपादन किया है।

एन्थोनी वैलेस ने व्यक्ति तथा समुदाय के बीच संबंध के आधार पर धार्मिक विचारों को वर्गीकृत किया है।

फ्रेजर (1890) ने अपनी पुस्तक गोल्डेन बानु में इस विचार का प्रतिपादन किया हैं। टायलर और फ्रेजर ने जादू को 'आभासी-विज्ञान माना है।'

इस तरह अनेक मानव वैज्ञानिको ने धर्म और जादू का प्रतिपादन किया हैं।

मानव शास्त्र में धर्म को परिभाषित करने का प्रथम श्रेय ब्रिटिश मानव शास्त्री एडवर्ड बर्नेट टायलर को जाता है।

टायलर (1871) के अनुसार "धर्म अध्यात्मिक शक्ति पर विश्वास है"।

मौलिनोस्की (1944) ने अपनी पुस्तक 'साइटिफिक थ्योरी ऑफ कल्चर' में धर्म की व्याख्या प्राकर्यत्मक सिध्दांत के आधार पर करने का प्रयास किया।

ऐडक्लिफ- ब्राउन (1952) के अनुसार धर्म की उत्पत्ति के संबंध में संरचना प्रकार्यवाद सिध्दांत की स्थापना की हैं।

इमायल दुर्खिम (1949) की पुस्त्क 'एलेमेटरी जार्म आफ रेलिजियस लाइक में समाज शास्त्री सिध्दांत का प्रतिपादन किया है। धर्म एक सामाजिक सच्चाई हैं।

फेजा (1890) ने अपनी पुस्तक गोल्डेन बाउ में इस विचार का प्रतिपादन किया है कि मानव समाज उदविकास की तीन अवस्थाओं से हो कर गुजर है, जादू धर्म और विज्ञान। जादू को "अभासी विज्ञान" माना गया हैं।

इस तरह धर्म और धर्म की भूमिका मानव के मन में डर, नाराजगी, उदासीनता, मानसीकतनाव, शारीरिक, असंतुलन सभी परिस्थितियों मे अनुकुलन के उपकरण का काम करता हैं।

अध्यायन के उद्देश्य एवम् लक्ष्य

किसी भी कार्य को करने से पहले उस कार्य के पिछे कुछ उद्देश्य एवं लक्ष होती हैं, बिना उद्देश्य के कार्य करने से निश्चित परिणाम निकलने की कोई उम्मीद नहीं होती हैं। कंवर समाज के धार्मिक विश्वास एवं जादुई क्रिया कलाप को पता लगाना मेरा लक्ष्या हैं।

धार्मिक विश्वास एंव जादुई क्रिया कलाप के महत्व को निम्न शिर्षकों के अन्तर्गत रखा जात सकता हैं।

1. यह शिर्षक आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक समाज कल्याण सभी क्षेत्रों मे विशेष महत्व दर्शाता हैं, इसका अध्ययन करना मेरा उद्देश्य हैं।
2. शोध का उद्देश्य कंवर जनजाति की धार्मिक विश्वास एवम् क्रिया कलाप का अध्ययन हैं।
3. कंवर समाज की धार्मिक मान्यताये, टोना-टोटका आदि का अध्ययन हैं।
4. कंवर समाज की जादुई मान्यतायें क्रिया-कलाप एवं इस पर विश्वास का अध्ययन हैं।
5. इसके तरत् शिक्षा, स्वास्थ, रहन-सहन, रीति-रिवाज के स्तर का अध्ययन किया जाता है, यह अध्ययन किसी भी समाज के संतुलित विकास को महत्वपूर्ण स्थान होता हैं। विश्लेषण करना
6. आदिम समाज आज भी शहरो से दूर
7. जंगलो मे निवास करता है, बहरी दुनिया से दूर इस लिए अध्ययन महत्व हैं।
8. कंवर जनजाति की धार्मिक जीवन का सम्पूर्ण जानकारी लेने का उद्देश्य हैं।
9. अनेक तथ्यों का अवलोकन करना मेरा उद्देश्य एवं लक्ष्य हैं।
10. धार्मिक स्थलों का अपना एक विशेष भौगोलिक महत्व भी होता हैं, भौगोलिक दशाएँ धर्म को प्रभावित करती है, जानकारी लेना मेरा लक्ष्य हैं।
11. धर्म एक विश्वव्यपी संस्था हैं। खोज करना।
12. तथ्यों का संकलन करना।
13. कार्य कारण सम्बन्धों की खोज करना।

शोध पध्दति

कंवर जनजाति के धार्मिक विश्वास एंव जादुई क्रिया कलाप: जशपुर (छ.ग.) सिकिरमा ग्राम के विशेष संदर्भ् में एक मानवशास्त्री अध्ययन विषय के अनुसंधान कार्य में मै निम्नलिखित पध्दति को अपनाई जो निम्न हैं।

1. **अवलोकन विधि**

सुनी सुनाई बातो के आधार पर प्रतिवेदन तैयार करने के बदले आँखों से देखकर लिया गया प्रतिवेदन ज्यादा विश्वासनीय होता हैं। अवलोकन विधि मे अनुसंधानकर्ता स्वयं घटनाओं को अपनी आँखो से देखत है, और प्रतिवेदन तैयार करता हैं।

पी.वी.यंग के अनुसार

अवलोकन स्वत: विकसित घटनाओं का उनके घ्टित होने के समय ही अपने नेत्रो के द्वारा व्यव्स्थित तथा जान-बुझ कर किया गया अध्ययन हैं।

एक संवेदनशील अनुसंधानकर्ता अवलोकन के द्वारा सूक्ष्म से सूक्ष्म सामाजिक क्रिया को समझ सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में मैंयथा संभव घटनाओं को देखकर तथ्य संग्रह करने का प्रयास किया हैं।

1) असहभागी अवलोकन

सहभागी अवलोकन अनयिंत्रित का ही एक प्रकार है, जिससे अध्ययन कर्ता स्वय अवलोकन समूह के माध्य उपस्थित रहते हुये भी उनके क्रिया-कलापो में भाग न लेकर एक पृथक एवं तटस्थ अवलोकनकर्ता की तरह अध्ययन करता है। अध्ययन समूह का सदस्य न होने के कारण वह एक मौनदर्शक के रूप में अध्ययन करता हैं।

2. **अर्ध्द-सहभागी अवलोकन**

किसी भी अनुसंधान में पूर्ण सहभागिता तथा पूर्ण असहभागिता दोनो ही अव्यवहरिक तथा कभी-कभी असंभव भी होती है। सहभागी एवं असहभागी अवलोकन एक ही प्रक्रिया के दो सिरे होते हैं। अवलोकनार्थ अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार कभी सहभागी तथा कभी असहभागी रहता। अर्ध्द सहभागी अवलोकन कहलाता हैं।

इस तरह मैं घटनाओं को अवलोकन करने का प्रयास किया, तथा इन विधियों को प्रयोग में लाने के उपरान्त ही अपना प्रतिवेदन तैयार की।

3. **साक्षात्कार विधि**

साक्षात्कार में कुछ व्यक्ति कुछ बिन्दुओं को आमने-सामने मिलकर बातचीत करते हैं।

सिन पाओं येंग

साक्षात्कार क्षेत्रीय कार्य की एक पध्दति जो एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों के व्यवहार को देखने से कथनों को लिखने तथा सामाजिक अथवा समुह अन्त: क्रिया के निश्चित परिणामों को निरीक्षण करने हेतु प्रयोग की जाती है। अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि साक्षात्कार वह विधि है, जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी विशिष्ट उद्देश्य को सामने रखकर परस्पर आमने-सामने होकर वार्तालाप एवं प्रश्नो का उत्तर देते हैं। यह मनावैज्ञानिक विधि है। जिससे साक्षात्कार उत्तरदाताओं की भावनाओ, विचारो मनोवृत्तियों का अध्ययन करता हैं। भी इसी विधि का प्रयोग करते हुए बैगा, ओझा, गुनिया आदि से अपने विशिष्ट उद्देश्य को सामने रखकर परस्पर आमने-सामने होकर होकर वर्तालाप एवं विचार भावनाओ को तथा उनकी मनोवृत्तियों को धयान में रखकर अनके अनुसार अपने प्रश्नों का जवाब हासिल किया।

4. प्रथमिक ऑकड़ो के साथ ही साथ द्वितीयक ऑकड़ो भी एकत्रित किया गया।
5. शोध कार्य में गुणात्मक और गणनात्मक पध्दतियाँ दोनो का प्रयोग किया गया।
6. फोटोग्राफी व वीडियों टेप पध्दाति का प्रयोग किया गया।
7. वैयक्तिक अध्ययन इत्यादि का प्रयोग किया गया।
8. क्षेत्र से प्राप्त ऑकड़ो के विश्लेषण एवंम् प्रस्तुतिकरण के लिए गणनात्मक पध्दतियाँ का प्रयोग किया गया हैं।

अध्ययन की सीमाएँ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान एम.फिल. 2012-13 द्वितीय छमाही लघु शोध पत्र के लिए मैं छत्तीसगढ़ राज्य जशपुर जिला, सिकिरमा ग्राम को चुना

1.1.2013 को हमलोग टिंकू के गाड़ी से सिकिरमा के लिए प्रस्थान किए। रहने की व्यवस्था हमलोग सरकारा में एक यदाव परिवार में किए थे। हमें वहाँ रहने के लिए कमरा दिया गया। सरकारा से लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर सिकिरमा गाँप था जहाँ हमलोगों को रोज पैदल चलकर आना-जाना होता था। रोजाना पैदल चलकर जंगल पहाड़ को पार करके सिकिरमा गाँव हमलोग अनुसंधान कार्य के लिए आते थे। जिससे हम लोग भयभीत रहते थे। सूर्यस्थ होने से पहले ही सरकारा पहुँचे जाते थे। रोज 10 कि.मी. पैदल चलने के कारण पैर बहुत दर्द होता था। जंगल के रास्ते से जाने में भी बहुत डार लगता था। डाटा इकट्ठा करने में काफी कठिनाईयों का समना करना पड़ा चुँकि जादु टोना, टोटकी आदि के बारे अनजान लोगों को बताने में संकोच कर रहे थे। दूसरी बात अपने घर क देवी-देवता को किसी को नहीं बताते हैं, बहुत कोशिष करने के बाद मुझे सारी जनकारी मिल पाई। मंत्र आदि को बैगा गुनिया ओझा गुप्त रखते हैं, मुझे डाटा प्राप्त करने में लोगों का विश्वास जितना पड़ा काफी घुलने मिलने के बाद ही सारी जनकारियॉ मिल पाई। भाषा को लेकर मुझे कोई कठिनाईयाँ नहीं हुई चूँकि ये लोग लोरिया बोली तथा जशपुरिया बोली बोलते है, यह नागपुरिया से मिलता जुलता हैं। यहाँ के कंवर जनजाति इस समय मजदुरी करने जाते थे, इस लिए सूचना दाताओं से नहीं मिल पाते थे। हमारे पहुचने से पहले ही वे लोग जंगल में लकड़ी कटने या मिट्टी ढ़ोने चले जाते थे 12 से 2 बजे तक सारे लोग मिल पाते थे। औरते तथा वृध्द व्यक्ति ही घ्ज़र पर रहते थे। उन्हीं से सारी जनजकारियाँ मिल जाती थी। खाने पीने, में कोई कठिनाईयों नहीं हुई। नहाने के लिए काफी परेशानी होती थी चूँकि यहाँ पर तालाब या कुंआ में नहाया जाता हैं। पानी काफी दूर से लाना पड़ता था। सिकिरमा और सरकारा गाँव जंगलो के बीच में है, इस लिए डर भी लगता था। इस जंगल में साँप भी हैं, इस लिए रास्ता देख कर चलना पड़ता था। मेरे शोध का विषय कंवर जनजाति का धार्मिक विश्वास एवं जादुई क्रिया कलाप है। इससे संबंधित डाटा लेने में बहुत मेहनत

करनी पड़ी, तथा हरेक कठिनाईयों का समना करते हुए यह शोध कार्य को पुरा करने की काशिश की हूँ। मेरे द्वारा की गई शोध कार्य में कुछ त्रुटियाँ भी हो सकती है, क्योंकि अनुसंधान कार्य करने मे समय लगता हैं, फिर भी मै कार्य समय पर प्रस्तुत कर रहीं हूँ।

अध्ययन क्षेत्र

जशपुर जिले का ऐतिहसिक पृष्ठीभूमि

जशपुरजिला जो वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है। 1905 तक बंगाल प्रेसोडेंसी के छोटानागपुर के आयुक्त के अधीन एक रियासत के रूप में रखा गया था, किन्तु बाद में मध्य प्रान्त के छत्तीसगढ़ संभाग के आयुक्त के अधीन रखा गया। 1 जनवरी 1948 को रायगढ़ जिला बनने के साथ ही यह रियासत जिले की एक तहसील के रूप में पूर्व वस्त्रो विस्तार व क्षेत्र फल में बिना कोई परिवर्त्तन किए परिवर्तित कर दी गई। जशपुर रियासत का प्रारंभिक इतिहास स्पष्ट नहीं है, यहाँ के निवासियो के अनुसार कि इस क्षेत्र में डोम राजाओं का शासन था। 17 वी और 18 वीं सदी में जशपुर में डोम राजाओं ने शासन किया। यह क्षेत्र ऊँची-नीची पहाड़ियों और संघन वनो के कारण बाहरी शत्रुओं से सुरक्षित था। इस क्षेत्र में नारायणपुर के आस-पास का वन क्षेत्र डोम राजाओं के शासन का केन्द्र था। यहॉ पर वन बहुत ही घना पाया जाता था। इसी वन में राजा अपना शिकार करने के लिए जया करते थे। राजाओं का शिकार करना मनोरंजन का कार्य माना जाता था। नारायणपुर से 0.7 कि.मी. पूर्व दिशा में बने स्थान डोम राजाओं की राजधानी थी। कहा जाता है कि जहॉ आज भी डोम राजाओं के ध्वस्त किले के अवशेष पडे है, यहॉ से करीब दो कि.मी. की दूरी पर देव टोंगरी (पहाडी) पर एक शिव मंदिर है। नारायणपुर के नजदिक ही रानी कोम्बो ग्राम के एक बैंगा के खेत की मेड़ पर रखे डोम राजाओं का नगाड़ा उनकी गौरव गाथा के प्रतीक हैं। स्थानीय लोग इन नगाड़ो को विजय डंका के नाम से पुकारते हैं। क्योंकि ये नगाडे डोम राजाओं का विजय की सूचना देने के माध्यम थे।

डोम राजाओं के शासन काल का इतिहास विस्तृत रूप से प्राप्त नहीं होता है, पर यह स्पष्ट है कि इन राजाओं का राज-पाट व वैभव ज्यादा दिनों तक नहीं चला सत्ता के सुख सुविधा ने इन राजाओं को प्रजा से काफी दूरी कर दिया और कुशासन से त्रस्त प्रजा उनके विरूध्द हो गई प्राप्त जानकारी के अनुसार पहले खुडिया के शासको ने डोम राजाओं के महत्वपूर्ण इलाको एवं नगरों पर छिट-फूट हमला करके उन्हें कमजोर किया, फिर सोनपुर के राजपूत्र राजकुमार सुजन राय

ने तत्कालीन डोम शासक रायमान को लड़ाई में परास्त कर इस वन क्षेत्र में अपना अधिकार जमा लिया। नारायणपुर से नवागढ़ तक फैली डोम राजाओं की रियासतें एक-एक कर छिन्न-भिन्न हो गई, और डोम राजाओं का नामों निशान मिट गया। डोम राजाओं का शासन अविवेकी और प्रजा विरोधी था। राजपूत सुजन राय की जात से यहाँ नये राजवंश का उदय हुआ। रतनपुर के घ्यक वंशी राजा कल्याण राय के समय यह रियासत रतनपुर राज्य की फयूडेटरी स्टेट थी, जो बाद में स्वतंत्र हो गई।

सन 1760 $ई_0$ में लगभग सरगुजा राज्य के तहत जशपुर रियासत में शामिल हुई। भोसले और अंग्रेजों के बीच 1818 ई में संधि हुई। संधि के अन्तर्गत जशपुर रियासत अंग्रेजी शासन के प्रत्यक्ष प्राधिकार में आ गई। बरामदा

सन् 1899 में ब्रिटिश सरकार ने जशपुर रियासत को सदन प्रदान कर राजा प्रतापनरायण सिंह देव को सी.आई.ई. की उपाधि प्रदान की। सन 1900 ई में राजा की मृत्यु होने पर उत्तराधिकारी के रूप में राजा विष्णु प्रताप सिंह देव को मान्यता दिया।

3 जनवरी 1924 ई. में इनकी मृत्यु होने पर देव शरण सिंह देव राजगद्दी पर विराजमान हुए। किन्तु इनकी मृत्यु 25 फरवरी 1937 को हो गई। इनकी मृत्यु हो जाने पर जशपुररियासत के अन्तिम शासक के रूप में राजा विजय भूषण सिंह देव उत्तराधिकारी बने। जिन्होंने रियासत के विलय तक शासन किया। 15 दिसम्बर 1947 को नागपुर अधिवेशन मे सरदार पटेल की सलाह पर इस्टर्न एजेंसी क राजाओं के साथ जशपुर का विनाश हो गया।

<u>राज्य एवं विकास खण्ड तथा जनपद का परिचय</u>

छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना 1 नवम्बर 2000 को हुई। पूरब में उडी़सा उत्तर में झारखण्ड, दक्षिण में आन्ध्रप्रदेश, पश्चिम में मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र है, इस राज्य में कुछ 16 जिले हैं। जो निम्न है -

1. कोरिया
2. सरगुजा
3. जशपुर
4. बिलासपुर

5. कोरबा
6. रायगढ़
7. जांगगीर
8. कवर्धा
9. दुर्ग
10. रायपुर
11. महासंमुन्द
12. राजनंदगॉव
13. धमतरी
14. कॉकेर
15. बस्तर
16. दंतेवाडा

जशपुर जिले के अन्तर्गत फरसाबहार विकास खण्ड आता हैं, इसकी स्थापना 2 अक्टूबर 1962 ई. में हुई थी। यह विकास खण्ड ट्राबल (Tirible Deplopment) से जाना जाता हैं। इस विकास खण्ड के अन्तर्गत कुल 99 ग्राम हैं। जिसमें 97 राजस्व ग्राम तथा दो गॉव सरकारी एंव विदुरपुर वन ग्राम के अन्तर्गत आते हैं। ग्राम पंचायत की संख्या 56 हैं, यहॉ की औसत वर्षा 14747 मिली हैं। एवं निकटतम रेलवे स्टेशन झारसुगडा हैं, जो 78 कि.मी. की दूरी पर हैं।

यह विकास खड 79 – 50 वर्ग कि.मी. में फैला हुआ हैं। 2001 ई. की अनुसूचित के अनुसार कुल जनसंख्या 983052 हैं, जिसमें पुरूष 98074 तथा महिला 49078 हैं। कृषक कजदूर 22048 कृषक 7 हजार 563 हैं।

परिवारिक उद्योग 1120

मुख्य कार्यशील व्यक्ति दफतरव्यक्ति 3030

सीमांत कार्य व्यक्ति 170233

गैर कार्यशील व्यक्ति 460995 हैं

कृषि योग्य भूमि 28018 हेक्टेयर

मुख्य फसल – धान, अरहर, उराद, मसुर

तिलहन – सरसो मुगफली, सोयाबीन इत्यादी.

राजकीय चिकित्सालय – प्राथमिक स्वास्थ केन्द्र 4
उपस्वास्थ केन्द्र 34
आयुर्वेदिक चिकित्सालय 1
विद्युत व्यवस्था – 92 गॉवो में विद्युत व्यवस्था हैं।
परिवहन व्यवस्था – सभी गॉव सड़को से जुड़े हुए हैं। कुल पक्की सड़के 165 कि.मी., एवं कच्ची सड़के 179 कि.मी. हैं। संचार (डाक घर) की संख्या 6 हैं।
साक्षारता – 52 हजार 9 सौं 82 जिसमें पुरूष साक्षारता 30 हजार 3 सौं 86 एवं महिलाएँ 22 हजार 196 इस जनपद में प्राथमिक विद्यायल 269 हैं। उच्च विद्यालय की संख्या 20 हैं, जिसमें 2 हजार 103 विद्यार्थी हैं, एवं मध्य विद्यालय की संख्या 821 हैं। जिसमें 5 हजार679 विद्यार्थी हैं। +2 (बारहवी) 09 हैं, जिसमें 899 विद्यार्थी अध्ययन करते हैं।

सिकिरमा ग्राम में 2001 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या, 25 अनुसूचित जाति 859 अनुसूचित जनजाति 37 अन्य लोग हैं, कुल जनसंख्या 921 हैं।

<u>गॉव का एक परिचय</u>

<u>सिकिरमा</u>

प्रखण्ड-	फरसाबहार
तहसील-	ऑफिस फरसाबहार नवाडीह
पंचायत-	सिकिरमा
पी.ओ.-	मण्डारबहार
ग्राम-	सिकिरमा
जिला-	जशपुर
राज्य-	छत्तीसगढ़

यहाँ के निवासियों की मान्यता हे, कि यहॉ पर डोम राजा का राज्य था। वह एक झील में मछलियॉ पाल रखा था, उसमें बहुत सी मछलियॉ रहती थी। उसे वह फंसाने के लिए रानी मछली को काहु पेड़ में सिकड़ से बंध दिया करता था और सी.सी.सी. की आवाज करता था जिसे सारी मछलिया जाल मे आ

फंसती थी। उसे उठा कर उस पेड़ पर सिका-बाहिंगा से टंग देता था। ऐसा ही वह अपना शिकार करता था। इसी कारण इस गॉव का नाम सिकिरमा पड़ा।

गांव की अवास्थिति

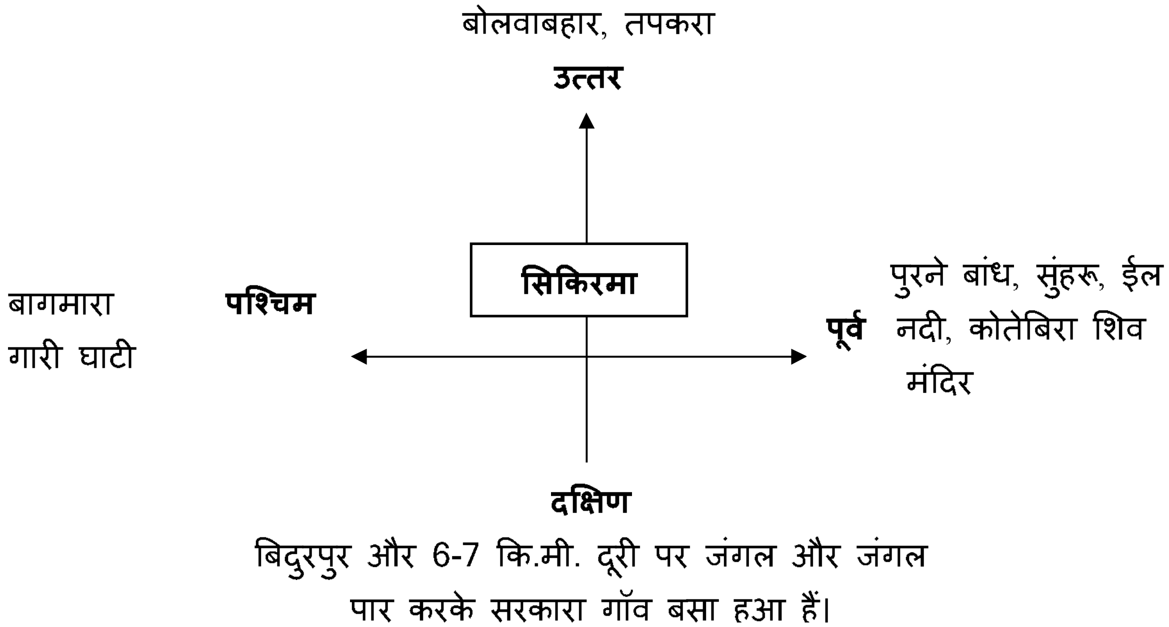

सिकिरमा गाव के लोग बहद सरल स्वभाव के हैं। इनका व्यवहार अचरण एवं रहन-सहन बहुत ही अच्छा हैं। ये लोग दूसरों की मदद करने के लिए सदा तत्पार्य रहते है। यहाँ के निवासियों का रहन-सहन साधारण है। किन्तु परिधान पुरूष लुंगी, कुर्ता, पैंट, गमछा इत्यादि, पहनते हैं। स्त्रियाँ साड़ी पहनती हैं, लड़कियाँ स्कार्ट सलवार सुट, फ्राक, आदि पहनती हैं। अपने शरीर में गहने भी धारण करते हैं।

<u>कला कृति</u>

गाँव के लोग अपने घरों के दीवारों पर चित्र बनाते हैं। कला पारंपरिक रूप प्रचलित हैं। त्यौहारो, विवाह आदि अवसरों पर घर की दीवारों एवं आंगन में विभिन्न प्रकार के चिन्ह एवं चित्र बनाएँ जाते हैं। इनका संबंध विशेष पौराणिक कथाओं से होता है। चित्रों पर गोत्र के साथ साथ स्थानीय संकेतो का भी प्रभाव द्वष्टिगांथार होता हैं । यहाँ के निवासी अनेक जाति के होने पर भी एक समाज में प्रेम से रहते है। विशेष अवसारों जैसे की शादी, विवाह, पर्व त्यौहार आदि मिलझुल कर मनाते हैं।

सिकिरमा गावकी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, मछली मरना, स्वर्ण धोना, तथा जंगलों पर आधारित हैं। यहाँ के लोग शिकार करने एक साथ जाते हैं। तथा शिकार अपास में बॉट्ते हैं। अपने- अपने धार्मिक कार्यों में नशापान करने के लिए, कोसना (हड़िया) पीने के लिए अन्य लोगों को भी बुलाते हैं।

सिकिरमा गाँव में मुख्य रूप से तीन जनजाति पाई जाती हैं। कंवर जनजाति, गोंड जनजाति तथा भुई जनजाति। यहाँ अन्य जाति के लोग भी निवास करते हैं। यहाँ की कुल जनसंख्या 921 हैं। कंवर जनजाति की जनसंख्या 654 हैं, जिसमें पुरूषो की संख्या 344 है, तथा महिलाओं की संख्या 310 हैं।

<u>यातायात</u>

सिकिरमा ग्राम जंगल और पहाड़ो के बीच में स्थित है। फिर भी यहाँ आने जाने के लिए एक कच्ची सड़क बनाई गई है। कहीं-कहीं पर पक्की सड़क भी देखने को मिलती हैं। सिकिरमा गाँव के निवासी अपने क्षेत्र के विकास के लिए प्रयत्नरत हैं। यातायात के साधन के रूप में साईकल, मोटर साईकल, ट्रैक्टर इत्यादि का प्रयोग करते हैं। अधिकतर लोग पैदल ही आते जाते हैं। यहाँ कोई भी बस या ऑटो टेम्पो नहीं चलता हैं। लोग पैदाल या साईकल से बाजार जाते हैं, यदि कही दूर जाना होता है, तो 6 से 7 किमी पैदल चलकर बस पकड़ते हैं। इस कारण लोगों को काफी परेशानी उठानी पड़ती हैं। ये लोग क्रय-विक्रय सप्ताहिक बाजार में करते हैं। कुछ भी घर का समान खरिदना होता हैं, तो काफी परेशानी होती हैं। वर्तमान में एक दो दुकाने भी देखने को मिलता हैं, जो काफी है, इन लोगों के लिए, चूंकि खाने की वस्तु बच्चों के लिए बिस्कूट, टॉफी आदि केवल मिलता हैं।

<u>जलवायु</u>

यहाँ की जलवायु भारत के अन्य क्षेत्रों की भांति ही है भारत में तीन ऋतुएँ हैं, वैसे ही छत्तीसढ़ राज्य के जशपुर जिले के फरसाबहार विकास खण्ड में भी तीन ऋतुएँ पाई जाती हैं। 1) ठण्डा, 2) गर्मी 3) बरसात। यहाँ गर्मी में अधिकतम 40^0 C तक तापमान चला जाता हैं। न्यूनतम जाड़ों में अधिकतम ठंड भी देखा गया हैं। न्यनतम 3^0 C तक नीचे चला जाता है। परन्तु जंगली क्षेत्र होने के कारण गर्मी में भी संध्याकाल लाल काफी खुगनुमा होता हैं।

1)ठण्डा

सिकिरमा के चारो और पहाड़ी क्षेत्र ओर जंगल होने के कारण तथा आस-पास नदियाँ भी है, यहाँ की बड़ी नदी ईब है,जिससे ठण्डा में अधिक ठण्डक महसूस किया जता हैं।

2) गर्मी

सिकिरमा के आस-पास में बड़ी नदियाँ हैं, फिर भी गर्मी के दिनों में सुख जाता है। और यहाँ के पालतू जानवर से लेकर जंगली जीव जान्तुओं, मानव सहित सभी पानी के लिए तकलीफे होती हैं। इस मोसम में मैला (गंदा) पानी पीने को मजबूर होना पड़ता हैं। इस कारण गर्मी में लेगों को अनेक समस्याओं का समना करना पड़ता हैं, तथा विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित होते हैं।

3) बरसात

बरसात कें मौसम में यहाँ बहुतअधिक वर्षा होती हैं और यहाँ की जमीन खेती योग्य मिट्टी हैं, लेकिन इन जनजातियाँ को खेती करने की रूचि नहीं हैं। अत: उपयुक्त जलवायु होने से सिकिरमा के जनजातियों थोडा़ बहुत खेती कर लेते हैं। जंगली जानवर से इसे भी बचाना पड़ता हैं, धान की खेती किया जाता हैं। बाकी की खेती जानवर इसे नष्ट कर देते हैं। इस कारण से खेती अधिक नहीं होती हैं।

<u>जीव जन्तु एवं वनस्पति</u>

सिकिरमा ग्राम चूँकि जंगलो एवं पहाडो़ में बसा हुआ हैं। अत: यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के जीव जन्तु एवं वनस्पति पाई जाती हैं। पेड़ पौधों में मुख्य रूप से निम्नलिखित पेड़ पौधो एवं जीव जन्तु मिलते है।

<u>पेड़-पौधे</u>

सिकिरमा ग्राम में निम्नलिखित पेड़ पौधे देखने को मिलता हैं। सीधा, आसान, चिरौंजी, भेल, महुँआ, कूसुम, गरूढ, सखुआ, नीम, आम इत्यादि विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधा देखने को मिलता हैं। पेडो़ में सबसे अधिक सीधा, आसन, महुआ, चिरौंजी का पेड़ पाया जाता हैं।

<u>जीव जन्तु</u>

इसी प्रकार जीव जन्तुओं में इस क्षेत्र में सांप, बिच्छु, हिरण, जंगली सुअर, खरगोश, गिलहरी, सियार, बन्दर, लोमड़ी आदि पाया जात हैं, इस जंगल में साँप अधिकता पाई जाती हैं। अनुसंधान कार्य के दौरान हमें पता चला कि साँप बहुत ज्याद्‌ हैं। हाथी का प्रकोप भी यहाँ छाया हुआ हैं।

पालतू जानवर

इस क्षेत्र में जंगली जीव जन्तु के अतिरिक्त पालतु जानवर भी पाए जाते हैं, इसमें निम्न जानवर पाए जाते हैं। गाय, बैल, बकरी, भेड़, भैसा, कुत्ता, बिल्ली इत्यादि इसके अलावा ये जनजातियाँ मुर्गी पालन भी करते है। अपने-अपने घरो में कुत्ता अनिर्वाय रूप से पालते ही हैं।

जंगली जानवर एवं पक्षी

सिकिरमा ग्राम के आस-पास के जंगलो में जंगली जानवर भी पाए जाते हैं। इनमें हाथी, सियार, भालू, लोमड़ी एवं जंगली सुअर, इत्यादि देखने को मिलता हैं, यहाँ बन्दर भी देखने को मिलता हैं। हाथी का प्रकोप, पुरे गाँव में बना हुआ हैं।

पक्षी

निलकंठ, कौआ, मैना, कुकुट, तोता, लिटिया, तितर, गौरिया, पड़की इत्यादि विभिन्न प्रकार की पक्षियाँ देखने को मिलते हैं। यहाँ के लोग साँप को देवता मानते हैं, तथा उसकी पूजा करते हैं, उसको नहीं मारते हैं।

पालतू जानवर एवं उनकी उपयोगिता

सिकिरमा गाँव के कंवर जनजाति जानवर पालते हैं। जैसे - गाय, बैल, भैंस, भेड़, बकरियाँ कुत्ता, बिल्ली इत्यादि जानवरों को विशेष रूप से पालते हैं। बकरियाँ अत्याधिक संख्या में देखने को मिलता हैं। इनकी उपयोगिता ये भिन्न - भिन्न रूपो में करते हैं, जैसे- गाय, बकरी से उन्हे दूध मिलता हैं, तथा उसे बेचते भी हैं, बकरियों से उन्हें काफी पैसा भी प्राप्त होता हैं, समय-समय पर ये अपने धार्मिक अनुष्ठनो पर बलि भी करते हैं, बलि करने के लिए इन लागों को बाहर से भेड़ या बकरा खरिदना नहीं पड़ता हैं। बैल तथा भैंस से खेती करने के लिए पालते हैं। बैल से जोत कोड़ किया जाता हैं, इन सभी को पालने से इन लोगों को काफी आय का स्रोत भी मिल जाती हैं। जिससे इनकी जीवन निर्वाह ठीक रीति से चलती हैं।

कुत्ता ये लोग विशेष रूप से घर की रखवाली तथा स्वंय की रखवाली यानि जंगली जानवरो से सुरक्षा प्राप्त हो सके इस लिए पालते हैं। जनजातियाँ आदि काल से ही कुत्ता को अपना पालतू पशु बनाना सीखा क्योंकि कुत्ता को मनुष्य हर समय अपने साथ् रख सकता हैं। ये जंगली जानवरो एवं शत्रुओं आदि से भी इनकी रक्षा करता हैं। रात्री के समय कुत्ता ही सबकी रक्षा करता हैं। जंगल क्षेत्र होने के कारण यहाँ के लोग कुत्ता पालते ही हैं। जंगल से भी इन लोगों को काफी सहायता मिलती हैं, चूंकि ये लोग जंगलों पर ही निर्भार हैं, जंगल से लकड़ी कांट कर बेचना, समय-समय पर महुआ, चिरौंजी, लाह, जडी-बुटी आदि बेच कर ये लोग अपनी जीविका चलाते हैं। कंवर जनजाति खेती के साथ-साथ जंगलों पर निर्भार हैं, इन्हें जंगलो से काफी आय मिल जाता है।

जल जमाव एवं निकासी

सिकिरमा ग्राम में अधिकांश घरो में नाली का आभाव पाया जाता हैं, यहाँ पर बरसात के समय में आने वाली वर्षा का जल सड़को पर ही इधर-उधर बिखरा पड़ा रहता हैं। यहाँ के अधिकांश भागों में जमीन उबड-खाबड़ है। अर्थात हम यह कहना चहते हैं, कि सिकिरमा ग्राम में रहने वाले लागों के लिए सड़को पर बहने वाली पानी से परेशानी होती हैं। पानी का कोई भी निकासी का उपाय नहीं हैं, जिससे सड़को पर ही पानी बिखरा हुआ, या जमा हुआ रहता हैं, जिससे काफी किचड़ भी हो जाता हैं। जिस कारण मक्खी, मच्छरों का प्रकोप हर समय छाया रहता हैं। यहाँ के सड़के मकानो से ऊँचे जगहों पर बने हुए हैं जिससे सड़को का पानी यहाँ के घरों के आस-पास फैल जाता हैं, जिससे किचड़ हो जाता है। घर में प्रयोग होने वाले पानी का भी निकासी का कोई व्यवस्था नहीं हैं। यानि इस गाँव में नाली नहीं बनी हैं, अपने घरो में प्रयोग की जाने वाली पानी को ये लोग घर के छोटी नालियों के द्वारा ही बहा देते हैं। जो कि आंगन से होते हुए घर के बाहर में जाकर फैल जाता हैं। सरकारी योजना के तहत भी कोई सुविधा यहाँ के लोगों को नहीं मिला हैं, सड़क के नाम पर कच्ची सड़क बनी हैं, जो बरसत के मौसम में किचड़ हो जाता हैं।